ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

अनुसूचित जनजाति वर्ग के आर्थिक विकास में पोषण स्तर का योगदान मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले की पेटलावद तहसील के विशेष संदर्भ में

Contribution of Nutrition Level In Economic Development of Scheduled Tribes With Special Reference To Petlavad Tehsil of Jhabua District of Madhya Pradesh"

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 27/11/2020, Date of Publication: 28/11/2020

धर्मेन्द्र सिंह चौहान
शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

विजया अग्रवाल
प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

मानव का प्रदर्शन भोजन और पोषण स्तर से प्रभावित होता है, पोषण स्तरए मनुष्य की जीवित और आर्थिक स्थिति भी प्रभावित होती है। मानव शरीर के स्वास्थ्य और कल्याण को बनाए रखने के लिएए इसे ताकत और ऊर्जा की आवश्यकता होती हैए जो भोजन में निहित पोषक तत्वों कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, खनिज लवण से प्राप्त होती है। किसी व्यक्ति का आर्थिक विकास तभी संभव है जब वह शारीरिक रूप से सक्षम हो। आदिवासियों की आबादी न केवल मध्य प्रदेश राज्य मेंए बल्कि पूरे भारत में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अध्ययन क्षेत्र की मुख्य जनजाति भील हैए जो प्राचीन काल से प्राकृतिक पर्यावरण से निकटता से संबंधित रहे हैं। वर्तमान समय में जहां उन्नत कृषि, स्वास्थ्य सुविधाएं, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण हर जगह पहुंच रहे हैं, वहीं दूसरी ओर ऐसी समस्याएं भी हैं, जिन पर काबू पाना मुश्किल लग रहा है। यानी भोजन की उपलब्धता और पोषण स्तर और साथ ही इसका आर्थिक स्तर भी प्रभावित होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में खाद्य पदार्थों की उपलब्धता और आर्थिक स्तर पर पोषण स्तर के प्रभाव को प्रमुखता से लिया गया है।

अनुसंधान समस्या का चयन आज भी, अनुसूचित जनजाति समुदाय में खाद्यान्नों की उपलब्धता और पोषण में बहुत कम सुधार हुआ है, जो चिंता का विषय है। और इससे उनकी आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है जो शोध का विषय भी है।

Human performance is affected by food and nutritional level, nutrition level, living and economic condition of man is also affected. To maintain the health and well-being of human body, it requires strength and energy, which is derived from the nutrients contained in food - carbohydrate, fat, protein, mineral salts. A person's economic development is possible only when he is physically capable. The population of tribals occupies an important place not only in the state of Madhya Pradesh but throughout India. The main tribe of the study area is the Bhils, who have been closely related to the natural environment since ancient times. At the present time, where advanced agriculture, health facilities, globalization, modernization are reaching everywhere, on the other hand there are problems which seem difficult to overcome. That is, food availability and nutritional level and also its economic level are also affected. The effect of the availability of food items and nutritional level on the economic level has been taken prominently in the presented research paper.

Selection of Research problem - Even today, there is very little improvement in the availability of food grains and nutrition in the Scheduled Tribes community, which is a matter of concern. And this affects their economic condition which is also a matter of research.

मुख्य शब्द : पोषण, आर्थिक विकास, कार्यक्षमता, खाद्यान्न, वैश्वीकरण
Nutrition, Economic Development, Efficiency, Food, Globalization

प्रस्तावना

मनुष्य की कार्यक्षमता भोजन एवं पोषण स्तर से प्रभावित होती है, पोषण स्तर, मनुष्य के रहन–सहन एवं आर्थिक स्थिती को भी प्रभावित करता है। मानव शरीर का स्वास्थ एवं सुचलायमान रखने के लिए शक्ति और ऊर्जा की आवश्यकता होती है जो कि भोजन में निहित पोषक तत्व– कार्बोहाइड्रेड, वसा, प्रोटीन, खनिज लवण से प्राप्त होती है। व्यक्ति का आर्थिक विकास तभी संभव है जब वह शारीरिक रूप से सक्षम हो। आदिवासियो की जनसंख्या केवल मध्यप्रदेश ही नही वरन् पूरे भारत वर्ष में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अध्ययन क्षेत्र की मुख्य जनजाति भील है, जो कि प्राचीनकाल से ही प्राकृतिक वातावरण से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है। वर्तमान समय मे जहाँ उन्नतशील कृषि, स्वास्थ्य सुविधाएँ, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण हर जगह पहुँच रहा है, वहीं दूसरी ओर ऐसी समस्याएँ है जिनसे निजात पाना मुश्किल प्रतीत होता है। वह है भोजन उपलब्धता तथा पोषण स्तर एवं इससे ही उसका आर्थिक स्तर भी प्रभावित होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में खाद्य पदार्थो की उपलब्धता और पोषण स्तर का आर्थिक स्तर पर प्रभाव को प्रमुखता से लिया गया है।

शोध समस्या का चयन

वर्तमान समय में भी अनुसूचित जनजाति समुदाय में खाद्यान्न उपलब्धता तथा पोषण में बहुत कम सुधार देखने को मिलता है जो चिंता का विषय है। एवं इससे इनकी आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है जो शोध का विषय ळें

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में खाद्यान्न उपलब्धता तथा पूर्ति का अध्ययन करना
2. पोषण स्तर हेतु विटामिन प्रोटीन, वसा कार्बोहाइड्रेट तथा अन्य की प्राप्ति तथा स्त्रोत का अध्ययन करना।
3. इस पोषण स्तर का आर्थिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

अध्ययन क्षेत्र झाबुआ जिले की पेटलावद तहसील है जो कि भील जनजाति बहुल क्षेत्र है इसका अक्षांश व देशात्तरीय विस्तार 23.0098 से 74.794 पूर्वी देशान्तर है। यहाँ की कुल जनसंख्या 2,32,800 है। तहसील में कुल 215 गांव है। पोषण की दृष्टि से सभी गांवो का अध्ययन न तो संभव है न व्यावहारिक। अतः समुद्र सतह से एक हजार से 2 हजार मी, 500 से 1000 मी. तथा 500 मी. से कम ऊँचाई वाले प्रत्येक क्षेत्र में से एक–एक गांव का चयनविस्तृत अध्ययन हेतु किया गया। जिसमें दालपुराबानी, असलाया प्रमुख ग्राम है। जिनकी जनसंख्या क्रमशः 418, 2190, 2164 है। पेटलावद तहसील के लगभग सभी गांव न्यूनतम साक्षरता दर के है। तहसील की औसत साक्षरता 29.72 है जो म.प्र. की 69.32 साक्षरता दर से आधे के बराबर है। अतः पोषण स्तर में भी न्यूनता हैं

शोध प्रविधि

पेटलावद तहसील के तीन ग्रामों को शोध अध्ययन हेतु चुना गया। यहाँ निवास करने वाले 10 प्रतिशत परिवार (कुल 30 परिवारो) का चयन आय, धर्म एवं व्यवसाय के आधार पर किया गया। प्रत्येक परिवार से प्रश्नावली एवं अनुसूची के माध्यम से प्राथमिक एकत्रित कर भोजन को कैलौरी तथा पोषक तत्वों में परिवर्तित कर आय.सी. एम. आर (ICMR) द्वारा अनुशंसित मात्रा से तुलना की गयी। तथा तीनो ग्रामों के पेटलावद तहसील की औसत उपलब्धता माना गया। द्वितीयक ऑकड़ो प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा तहसील एवं जिला अस्पताल से प्राप्त किये गये।

शोध अध्ययन–ग्रामों की सामान्य जानकारी

ग्राम का नाम	जनसंख्या	परिवारों की संख्या	साक्षरता
दालपुरा	418	69	53.21 %
असलाया	2164	392	39.95%
बनी	2190	439	58.16%

स्त्रोतः जनगणना रिपोर्ट 2011

पेटलावद तहसील कृषि अध्ययन

भूमि का प्रकार	प्रतिषत
कृषि योग्य	54.91
कृषि अयोग्य	
योग	100

स्त्रोतः भूअभिलेख

फसल प्रतिरूप

फसल का नाम	प्रतिषत
ज्वार	18.84
बजरा	12.86
गेहूँ	7.22
कपास	15.99
कुल कृषि क्षेत्र हेक्टयर	54.91

स्त्रोतः भूअभिलेख

पोषण उपलब्धता की आवष्यकता एवं पूर्ति के तत्व

मानव षरीर को स्वस्थ और सुदृढ़ बनाये रखने के लिए शक्ति और ऊर्जा की नितांत आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति भोजन में निहित पोषक तत्व, कार्बोहाड्रेट, वसा की प्रमुखता वाले भोजन को ऊर्जावर्धक भोजन, प्रोटीन की अधिकता वाले भोजन को निर्माणकारी भोजन तथा प्रोटीन, विटामिन एवं खनिज निहित भोजन को रक्षात्मक भोजन कहते है।

विटामिन

रासायनिक अभिक्रियाओ के उत्प्रेरण हेतु एवं स्वास्थ की वृद्धि हेतु विटामिन आवश्यक है इनके अभाव में हीनता जन्य रोग उत्पन्न होते हैं।

विटामिन A (केरोटिन)

ये जंतु एवं वनस्पति भोज्य से प्राप्त होता है।

विटामिन B 1

इसे मौरेल विटामिन भी कहते है। इसका प्रमुख स्त्रोत अनाज, तेल, दाले है।

विटामिन B 2(रोइबोफ्लोबेन)

ये विटामिन, माँस, मछली, अण्डे व हरी सब्जियो से प्राप्त होता है।

विटामिन C

कोशिकाओ, अस्थि, दाँतों तथा बंधक ऊतको को जोड़ने में सहायक होते है। ये खट्टे फलो से प्राप्त होते है।

नियासिन

शरीर के पाचन संस्थान तथा नाड़ी संस्थान एवं त्वचा की सामान्य क्रियाशीलता के लिए अत्यन्त आवश्यक होता है जो माँस, मछली अण्डा से प्राप्त होता है।

खनिज लवण

अस्थि एवं दांतो के निर्माण में सहायक होता है।

फॉस्फोरस

स्नायविक संस्थान, अस्थि, दांतो के निर्माण के साथ ही रक्त को शुद्ध करने में सहायक है।

लोहांश

हिमोग्लोबिन के निर्माण में सहायक है।

पोषण उपलब्धता का अध्ययन

ग्राम का नाम	कैलोरी उपलब्धता	प्रोटीन उपलब्धता ग्रा. में	वसा उपलब्धता ग्रा.में	कार्बोहाइड्रेट उपलब्धता ग्रा. में
दालपुरा	1853.31	65	36.06	36.06
असलाया	1913.58	66	43.43	43.43
बानी	2037.68	64	48.41	47.41

स्त्रोत – स्वास्थ्य एवं मानव विकास मंत्रालय, जिला झाबुआ

उपरोक्त आंकडो के अनुसार तीनो ग्राम में कैलोरी उपलब्धता ICMR के मानक (2400 कैलोरी प्रतिव्यक्ति) के अनुसार बहुत कम है। उपरोक्त ग्रामो के निवासी सामान्यतः सर्वाहारी है। अतः इन्हे प्रोटीन पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हो जाता है। जो कि क्रमशः 65, 66, 64 ग्राम है। सर्वेक्षित ग्रामो मे वसा का प्रमुख स्त्रोत दूध तथा मांस है। वसा प्राप्ती में जो मानक है उससे 28.95 प्रतिशत कम है। ऊर्जा के स्त्रोत के रूप में कार्बोहाइड्रेट भी 28.95 प्रतिशत कम है।

पोषण स्तर मापन

ग्राम	विटामिन A	विटामिन B1	विटामिन B2	विटामिल C	नियासिन	खनिज लवण	फॉस्फोरस	लोहांष
दालपुरा	1584.44	1.69	0.91	25.07	9.45	2.70	1.77	13.69
असलाया	1776.00	1.89	0.90	36.10	12.92	3.40	1.42	23.28
बानी	2751.50	2.30	0.95	39.77	13.14	3.62	1.85	25.61

स्त्रोत – स्वास्थ्य एवं मानव विकास मंत्रालय, जिला झाबुआ

उपरोक्त आंकड़ो के अनुसार चयनित ग्राम की विटामिन A उपलब्धता क्रमशः 1584.44, 1776.00, 2751.50 माइक्रो ग्राम है जो मानक आवश्यकता (उपयोग ईकाई 1 दिन 5000 मा.ग्रा) से 59.25 प्रतिशत कम है। विटामिन B, उपलब्धता क्रमशः 1.69,1.89, 2.30 एवं तहसील की औसत उपलब्धता 1.96 मिलीग्राम है जो मानक आवश्यकता (1.30मि.ग्रा) से 50.77 प्रतिशत अधिक है।

विटामिन B2 उपलब्धता क्रमशः 0.91, 0.90, 0.95 मिली ग्राम है जो मानक आवश्यकता (1.40 मि.ग्रा.) से 34.29 प्रतिशत कम है। विटामिन C उपलब्धता 25.07, 36.77 मि.ली ग्राम है जो मानक आवश्यकता (49.00 मि.ग्रा.) से 31.22 प्रतिशत कम है।

नियासिन की उपलब्धता चयनित ग्रामों में क्रमशः 9.45, 12.92,13.14 मिलीग्राम है जो औसत मानक उपलब्धता (12.00) से मात्र 6.03 प्रतिशत कम है खनिज लवण की उपलब्धता चयनित ग्रामों में क्रमशः 2.70, 3.40, 3.62 ग्राम है, जो मानक आवश्यकता (0.90 ग्राम प्रतिदिन उपयोग) से 260 प्रतिशत अधिक है।

फॉस्फोरस की उपलब्धता चयनित ग्रामों में क्रमशः 1.77, 1.42 तथा 1.85 ग्राम है जो मानक आवष्यकता (1.00 ग्राम प्रतिदिन)से 68 प्रतिशत अधिक है।

लोहांश उपलब्धता क्रमशः 13.69, 23.28, 25.61 ग्राम है। जो मानक आवश्यकता (उपयोग/प्रतिदिन 1.70 ग्राम) से 27.71 प्रतिशत अधिक है।

निष्कर्ष

1. अध्ययन क्षेत्र में कार्बोहाइड्रेट, वसा, केरोटिन विटामिन B2 (राइबोफ्लेविन) तथा विटामिन C (एस्कॉरबिक एसिड) की अनुशंसित आवश्यकता से कम उपलब्धता के कारण रतौंधी, स्टेमोटाईस, कोलाइटिस ग्रेस्ट्रइन्टेस्टाइनल डिसआर्डर, अस्थि रोग, रक्ताल्पता, क्षय रोग, अस्थमा रोग, चर्मरोग इत्यादि हीनताजन्य रोग होना पाया गया ।
2. अध्ययन क्षेत्र में 'कैलोरी इनर्जी यिल्डिंग फुड'' तथा रक्षात्मक भोजन की उपलब्धता आवश्यकता से कम होने के कारण यहाँ न्यून पोषण तथा कुपोषण की स्थिति पायी गयी।
3. खाद्य पदार्थो की न्यून उपलब्धता का मुख्य कारण गरीबी होना पाया गया तथा स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव भी देखा गया।
4. तहसील के वे ग्राम जो शहर या मैदानी ईलाकों के पास के वहाँ पोषण स्तर अच्छा है।
5. जिन परिवारों का पोषण स्तर अच्छा है उनकी कार्यक्षमता अधिक है एवं उन परिवारों की आर्थिक स्थिति भी उतनी ही सुदृढ़ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Chakraborti, A.k., "Foodgrain Sufficirncy pattern in India". Geo Review, Vol, 60 No.2 1970 page-127.*
2. *Chandrakar, A.R., "Rural Nutrition in India", Bhashika prakashan, Raipur (M.P.)*
3. *Gopalan, C. Ramasastri ans S.C. Bala-subramaniam, "Nutritive Value of India Foods" National Insititute of Nutrition (ICMR) Hyderabad, 1981.*
4. *Mohamad Ali, '.Food and Nutrition in India" K.B. publication, New Delhi, 1979.*
5. *Sukhatme PrV., "The Food and Nutrition Situation in India Journal of Agri-culural Economics, Bombay 1965.*